व्यापारचक्र

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था कीएक प्रमुख विशेषता यह है कि उनमें समय-समय पर आर्थिक उतार-चढ़ाव होते रहते हैं ।इस प्रकार के उतार-चढ़ाव अर्थव्यवस्था में निवेश उत्पादन,आय, रोजगार तथा की मत स्थिति को प्रभावित करते हैं ।ऐसे आर्थिक उतार-चढ़ाव जिनकी प्रवृत्ति नियमित रूप से बार-बार उत्पन्न होने की होती हैव्यापार चक्र अथवा चक्रीय आर्थिक उतार-चढ़ाव कहलाते हैं।

अमेरिकी अर्थशास्त्री मिचेल के अनुसार "व्यापार चक्र संगठित समुदायों की आर्थिक क्रियाओं में उतार-चढ़ाव काकी एक स्वरूप है।"(business cycles species of fluctuation in the economic activities of organised economic communities.)

प्रोफेसर कींस के अनुसारएक व्यापार चक्र बढ़ती हुई कीमतों तथा कम प्रतिशत बेरोजगारी वाले अच्छे व्यापार के समय के पश्चात बेरोजगारी की ऊंची प्रतिशत तथा गिरती हुई कीमतों वाले बुरे व्यापार कीअवधियोके अस्तित्व से बनता है । (A trade cycle is composed of periods of good trade characterized rising price and low unemployment percentages, altering with periods of bad trade characterized by falling prices and high unemployment percentages.)

जेम्सअर्थ हिस्ट्री के अनुसार "चक्रीय उच्चावचनोंमें विस्तार एवं संकुचन की वैकल्पिक लहरें दृष्टिगोचर होती है।इसलिए लय स्थिर नहीं होती , परंतु वे चक्रीय इस अर्थ में होती है कि संकुचन एवं विस्तार की प्रावस्था है बार-बार आवृत्ति होती हैं और उनका स्वरूप लगभग एक सा ही होता है।"(These cyclical fluctuations are characterized by alternative waves of expansion and contraction they do not have a fixed rhythm, but they are cyclical in that the phases of contraction and expansionrecur frequently and in fairly similar pattern.)

इस प्रकारआर्थिक क्रियाओं के स्तर में उतार-चढ़ावही व्यापार चक्र कहलाताहैं।विभिन्न व्यापार चक्र एक दूसरे से कई प्रकार से भिन्न होते हैं, परंतु सभी की चार समान अवस्थाएं होती हैं ।इन्हें तेजी,अवसाद, मंदी,और समुत्थान कहते हैं।इस समान अवस्थाओं के बावजूद विभिन्न व्यापार चक्र एक दूसरे से समय अवधि तथा तीव्रता में काफी भिन्न होते हैं । सामान्य बड़े व्यापारिक चक्र औसतनआठयानो वर्ष

कीसमयअवधि के होते हैं, लेकिन कई व्यापारिक चक्र तो 5 वर्ष तक के छोटे और कई 12 वर्ष तक के बड़े भी होते हैं। इसी प्रकार विभिन्न चक्र तीव्रता की दृष्टि से भी एक दूसरे से काफी भिन्न होते हैंउदाहरण के तौर पर 1929 और 1933 के बीच केवर्षों में जो महान मंदी आई उससे राष्ट्रीय आय,उत्पादन तथा रोजगार पर पहले की मंदिओ की अपेक्षा बहुत अधिक प्रभाव पड़ा था।

इस प्रकार विभिन्न परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि व्यापार चक्र पूंजीवादी अर्थव्यवस्था मेंआर्थिक क्रियाओं के उतार-चढ़ाव का घोतक है जिसमें एक निश्चित अवधि के पश्चात नियमित रूप से तेजी औरमंदीकी अवस्थाएंबारी बारी से आती रहती है।

व्यापारचक्रकीप्रकृत्तिकी स्पष्ट व्याख्या के लिए इसकी विशेषताओं का उल्लेख आवश्यक है वे निम्नप्रकारः

- व्यापार चक्र से उत्पन्न होने वालेउतार-चढ़ाव का स्वरूप चक्रीयका है। दूसरे शब्दों में, यह उतार-चढ़ाव बार-बार होते हैं और उनमें पुनरावृति का स्वरूप होता है। तेजी के बाद मंदी और मंदी के बाद तेजी का क्रम चलता रहता है।
- कुछअर्थशास्त्री यह मानते हैं की इन उतार-चढ़ाव में सामा यिकताका गुण होता है ; अर्थात तेजी मंदी का चक्र लगभग एक निश्चित अवधि में पूरा होता है ।हेंसन के विचार में व्यापार चक्र की सामान्य अवधि 7 से 10 वर्ष की होती हैं । परंतु अधिकांश देखा गया है कि यह आवश्यक नहीं है की व्यापार चक्र समय अवधि तथा छैला की दृष्टि से समान हो अथवा नियमित इस प्रकार व्यापार चक्र बार-बार होते हैं परंतु नियमित नहीं होते हैं।
- व्यापार चक्र गति लहरों के समान होती है ।पूंजीवादी अर्थव्यवस्थामेलहरों से तात्पर्य व्यापार चक्र में आने वाले तेजी और मंदी से होता है।कुछ लहरें अ धिक शक्तिशाली होती है और कुछ कम परंतु प्रत्येक लह रों की प्रकृति एक दूसरे से काफी मिलती-जुलती हैं।
- विस्तार और संकुचन का स्वरूप संचयी होता है, अर्थातहरेक अवस्था अपने आप ऐसे तत्वों को संचय करती है जो इसे विपरीत दिशा में ले जाती है । तेजी वा मंदी का

समय अवधि नियमित अथवा निश्चित तो नहीं होते हैं , परंतु यह निश्चित है कि ना तो तेजी और ना ही मंदी की स्थिति अनिश्चित काल के लिए बनी रह सकती है।

- व्यापारचक्र के प्रभावों में सम क्रमिककी विशेषता होती है अर्थात यह प्रभाव अर्थव्यवस्था के किसी अंग अथवा क्षेत्र तक सीमित नहीं रहते हैं ,अभी तो संपूर्ण अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं।
- वर्तमान समय में आर्थिक जीवन का स्वरूप अंतरराष्ट्रीय होने के कारण एक देश में व्याप्त मंदी अथवा तेजी की समस्या अंतरराष्ट्रीय समस्या बन सकती है।
- अर्थव्यवस्था में सभी क्षेत्र व्यापार चक्र से समान रूप से प्रभावित नहीं होते हैं । उपभोग पदार्थों की अपेक्षा पूंजी पदार्थों पर किए गए व्यय में उतार-चढ़ाव अधिक होता है। कृषि पदार्थों की कीमतों में अधिक लचक होते हैं , और निर्मित पदार्थों की कीमतों में कम, थोक कीमतों में परिवर्तन अधिक होता है , फुटकर कीमतों में उससे कम वह मजबूरियों में और भी कम होता है।
- व्यापार चक्र अर्थव्यवस्थामौद्रिकक्षेत्रों को ज्यादा प्रभावित करते हैं। तेजी की दशा में मुद्रा की मांग बढ़ जाती है जिससे बैंकों द्वारा साख निर्माण की गति बढ़ जाती है और मंदी की दशा में उस में कमी आती है।

व्यापार चक्र की अवस्थाएं

- अमेरिकी अर्थशास्त्री वर्षा तथा मिचेल के अनुसार प्रत्येक व्यापार चक्र मेंगर्ततथा शिखर की 2 अवस्थाओं के अतिरिक्त दो अन्य अवस्थाएं इन दोनों के बीच ही होती हैं।इस प्रकार एक व्यापार चक्र के चार अवस्थाएं होते हैं
- मंदीया संकुचन
- पुनरुत्थान
- समृद्धि तथा तेजी अथवा विस्तार
- प्रतिसार या सुस्ती

व्यापार चक्र की एक अवस्थाके बाद दूसरीउत्पन्न होता है।समृद्धि समाप्त होते ही सुस्ती आरंभ हो जाती है और सुस्ती मंदी की स्थिति तक ले जाती है।मंदी के बाद पुनरुत्थान का क्रम आरंभ हो जाता है और पुणःसमृद्धि की ओर बढ़ने लगती है।व्यापार चक्र की एक अवस्था समाप्त होते ही दूसरी अवस्था आरंभ हो जाती है। किसी भी अवस्था का कोई निश्चित समय निर्धारित नहीं होता है।जैसा की

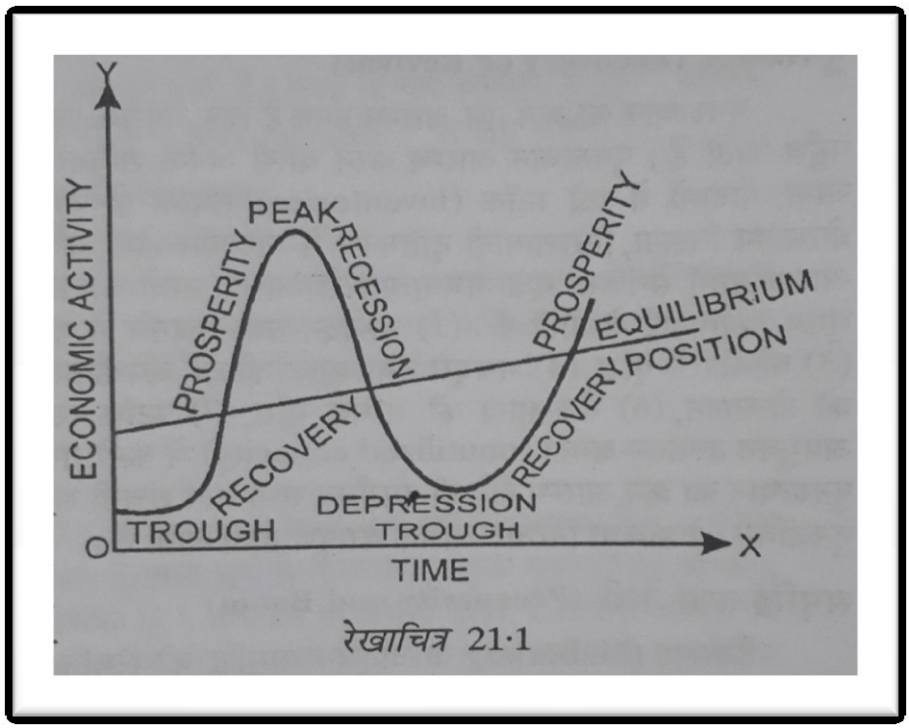

रेखाचित्र 21·1

रेखा चित्र में स्पष्ट हैसमृद्धि के लिएआपस्विंग(Prosperity), सुस्ती के लिए निम्नमोड़(Downturn/Recession), अंग्रेजी में इसे डाउनटर्न, तथा मंदी के लिए अधोगति अंग्रेजी में डाउनस्विंग(Depression),पुनरुत्थान के लिएआपटर्नशब्दों का प्रयोग किया जाता है।

व्यापार चक्र के सिद्धांत

व्यापार चक्र के संबंध में अर्थशास्त्रियों ने कई सिद्धांत बताए हैं यह सिद्धांत मुख्य रूप से दो प्रकार केहैंः

- बाहयसिद्धांत
- आंतरिक सिद्धांत

बाहय सिद्धांतमेंबताया गया है किव्यापार चक्रबाहरी कारणों सेप्रभावित होती है।महत्वपूर्ण बाहरीकारणजैसे कि युद्ध, जनसंख्या में वृद्धि, नए अविष्कार, राजनीतिक घटनाएं इत्यादि।आंतरिक सिद्धांत अर्थव्यवस्था में व्यापार चक्र उत्पन्न करने वाले अंतर जनित कारणों की व्याख्या करते हैं।यह सिद्धांतअर्थव्यवस्था की आंतरिक क्रियाओं की ओर ध्यान दिलाते हैं।कुछ अर्थशास्त्री तो व्यापार चक्र सिद्धांतों का मुद्रा तथागैर मुद्रा सिद्धांतों में वर्गीकरण करते हैं जबकि दूसरे इन्हें वास्तविक, मनोवैज्ञानिक,मौद्रिक और उन सिद्धांतों में जो व्यय,बचत तथा निवेश में संबंध रखते हैं।

हटेका व्यापार चक्र का सिद्धांत

प्रोफेसरआर.हटरेकेअनुसारव्यापार चक्र एकनितांतमौद्रिक समस्या है।यह व्यापारियों की ओर से मुद्रा की मान प्रवाह में होने वाली परिवर्तन है जिसके परिणाम स्वरूप अर्थव्यवस्था में समृद्धि तथा मंदी आती है।उनका मत है कि हड़ताल बाढ़, भूकंप, सूखा,युद्ध आदिगैर मौद्रिक कारण आंशिक मंदी तो ला सकते हैं, चढ़ाव लाते हैं, जिससे आगे उत्पादकों तथा व्यापारियों की ओर से मुद्रा की मांग के प्रभाव में परिवर्तन होते हैं।वर्तमान युग में बैंक साख भुगतान का प्रमुख साधन है। बैंक प्रणाली ही ब्याज की दर को घटाया बढ़ा कर अथवा प्रतिभूतियों को खरीद कर या सौदागरोके हाथों बेच कर साखको बढ़ातीयाघटाती है।इससे अर्थव्यवस्था में मुद्रा का प्रवाह बढ़याघट जाता है और इस प्रकार अर्थव्यवस्था में समृद्धि अथवा मंदीआ जाती है।

व्यापार चक्र का प्रसार अवस्था तब शुरू होतीहै, जब बैंक उधार सुविधाओं को बढ़ा देता है।ब्याज की उधार देने की दर घटाकर या प्रतिभूतियां खरीद कर यह उधार सुविधाएं प्रदान की जाती है। इससे सौदागरओ तथा उत्पादकों को उधार लेने मे प्रोत्साहनमिलताहै।कारण यह है कि वे ब्याज दर में परिवर्तनों के प्रति बहुत सचेत होते हैं। इसलिएऋण सस्ती दर पर मिलने लगता है, तो वह अपनास्टाक या माल बढ़ाने के लिए बैंकों से उधार लेते हैं। इसके लिए वे उत्पादकों को बड़े आर्डर देते हैं जो आगे उस बढ़ी हुई मांग को पूरा करने के लिए उत्पादन के अधिक साधन काम में लागाते हैं।परिणामतः, उत्पादन के साधनों के स्वामियों मौद्रिक आयबाढ़ जाते हैजिससेवस्तु परव्ययबाढ़ जाते हैं। सौदागर देखते हैं कि उनका स्टॉक खत्म होता जा रहा है। वे उत्पादकों को अधिक आर्डर देते हैं। इससे उत्पादक सक्रियता,आय, परिव्यय, मांग में वृद्धि होती है और सौदागरों का स्टॉक और कम हो

जाता है।हार्टेके अनुसारबढ़ रही सक्रियता का मतलब है बढ़ रही मांग और बढ़ रही मांग का मतलब है बढ़ रही सक्रियता,एकदुष्चक्र, उत्पादक सक्रियता का प्रसार शुरू हो जाता है।जैसे-जैसे प्रसार की सही प्रक्रिया चलती है, वैसे वैसे उत्पादक कीमतें बढ़ाने लगते हैं।ऊंची कीमतों से व्यापारियों को अधिक उधार लेने की प्रेरणा मिलती है ताकि वे और अधिक लाभ कमाने के लिए और भी अधिक स्टॉक रोक सके। इस आशावादीता उधार लेने को प्रोत्साहन देती है, उधार लेने से विक्रय बढ़ते हैं और विक्रय से आशावादिता बढ़ती है।

हॉट का कहना है कि समृद्धि निरंतर नहीं चलती रहतीहै।जब बैंक ऋण का प्रसार रूप देते हैं। तो समृद्धि समाप्त हो जाती है बैंक और उधार देने के लिए इसलिए इनकार कर देते हैं कि उनके नगदी कोषरिक्त हो जाते हैं और जो मुद्रा परिचालन में होता है उसे उपभोक्ता नगदी धारणाओं के रूप में खपा लेते हैं। दूसरा कारण यह है कि घरेलू वस्तुओं की कीमतें बहुत बढ़ जाती है जिनके परिणामस्वरूप निर्यात की तुलना में आयात बढ़ जाते हैं, तो विदेशों को सोना निर्यात करना पड़ता है। इस कारणों से विवश होकर बैंकों को ब्याज की दरें बढ़ानी पड़ती है औरवे उधार देने से इंकार कर देते हैं। बल्कि वे व्यापारी समुदाय को कर्जा चुकाने के लिए कहते हैं इससे व्यापारिक मंदी की आवस्था शुरू हो जाती है।

बैंकों का कर्जा चुकाने के लिए व्यापारी अपना माल बेचने लगते हैं। इससे कीमतों के गिरने का प्रक्रिया शुरू हो जाती है।व्यापारी लोग उत्पादकों के लिएदिए गए अपने ऑर्डर भी कैंसिल कर देते हैं।मागँ गिर जाने के कारण, उत्पादक अपनी उत्पादन सक्रियता घटा देती हैं।परिणामस्वरूप उत्पादन के साधनों की मांग गिर जाती है, बेरोजगारी फैलने लगती है, आय घटने लगती है। गिरती हुई मांग घटी हुई कीमतें तथा आय- यह सभी मंदी को गति प्रदान करती है। बैंकों का कर्जा चुकाने में असमर्थ कुछ फॉर्मे में दिवालिया हो जाते हैं, और इस प्रकार बैंकों को मजबूर कर देती है कि वह अपनी साख में और संकुचन करें। इस प्रकार समस्त प्रक्रिया संचयी बन जाती हैऔर अर्थव्यवस्था को मंदी में धकेल देती है।

हट्रे के अनुसार पुनरुत्थान के प्रक्रिया बहुत धीमी तथा रुक रुक कर चलती है। जब मंदी रहती है तो जो भी कीमतें मिले उसी पर व्यापारी अपना स्टॉक बेचकर बैंकों का कर्जा चुकातें हैं परिणामस्वरुप

बैंकों की रिजर्व में मुद्रा आने लगती है और बैंकों के कोषबढ़ते हैं। यद्यपि बैंक दर बहुत कम होती है, फिर भी साख गतिरोध बना रहता है जो आर्थिक सक्रियता में निराशावाद के कारण व्यापारियों को बैंकों से उधार लेने से रोके रखता है।केंद्रीय बैंक इस गतिरोध को सस्ती मुद्रा नीतिअपना कर समाप्त कर सकती है, जो अंततः अर्थव्यवस्था में पुनरुत्थान ला देता है।आलोचनाएं.

- साख प्रसार या संकुचन तेजी अथवा मंदीनहीं ला सकताहैं।
- समृद्धि अनंतकाल के लिए चलाई नहीं जा सकती और मंदीरोकी नहीं जा सकतीहैं।
- व्यापारी केवल बैंकसाखपर निर्भर नहीं रहतेहैं।
- व्यापारी ब्याज दरों में परिवर्तनों से प्रभावित नहीं होते हैं।
- व्यापारियों के निर्णय ब्याज दर परिवर्तनों से प्रभावित नहीं होतेहैं।
- मालसूचियों में उतार-चढ़ाव चक्र पैदा नहीं कर सकतेहैं।
- यह सिद्धांत चक्र कीआवर्तिता की व्याख्या करने में भी असमर्थ है।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि हर्टेका सिद्धांत अपूर्ण है क्योंकि यह केवल मौद्रिक साधनों पर बल देता है और गैर मौद्रिक साधनों कीउपेक्षाकरते हैं।